करुणा निधान भगवान महावीर

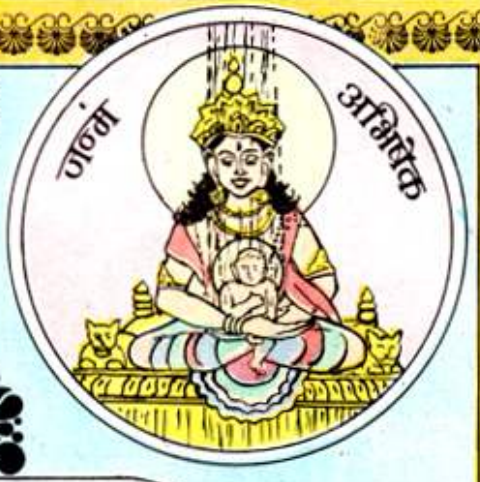

'तीर्थंकर' पद संसार में सर्वोच्च महान पद है। अनेक जन्मों की तपस्या और साधना के फलस्वरूप आत्मा इस महान पद को प्राप्त करती हैं। तीर्थंकर भगवान महावीर के इस पद तक पहुँचने के पीछे २७ जन्मों की तपस्या, और साधना की लम्बी कहानी है।

पूर्व-भव	जन्म	दीक्षा	केवलज्ञान

जम्बूद्वीप के पश्चिम महाविदेह में जयन्ती नगरी पर राजा शत्रुमर्दन का राज्य था। वहाँ नयसार नाम का एक वनरक्षक रहता था, जो बड़ा दयालु, सदाचारी, और सरल हृदय था। एक दिन राजा ने नयसार को आदेश दिया–

दोपहर का समय होने पर नयसार ने अपने सेवक को आज्ञा दी–

धूप बहुत तेज हो गई है। मजदूरों को भोजन की छुट्टी दे दो,

नयसार स्वयं भी भोजन करने के लिए एक घने वृक्ष की छाया में बैठ गया।

सेवक ने नयसार के सामने भोजन और छाछ का मटका रख दिया।

मन हो रहा है, पहले किसी अतिथि को भोजन कराकर फिर भोजन करूँ?

मुनियों को देखकर नयसार प्रसन्न हुआ। उनके सामने गया और नमस्कार करके पूछा–

महात्मन्! घने जंगल में चिलचिलाती धूप में आप इधर कैसे?

जंगल की पगडण्डियों में हम रास्ता भूल गये।

तभी उसने देखा दूर से कुछ तपस्वी मुनि उसी की तरफ आ रहे हैं।